(1)

हिन्दी - प्रतिष्ठा — द्वितीय वर्ष

आधुनिक काव्य — प्रश्न पत्र - 3

पन्त का प्रकृति चित्रण

~~प्रकृति~~ प्रकृति और मानव जीवन का सम्बन्ध घनिष्ट है कि जीवन का कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं। कवि सामान्य मानव से अधिक संवेदनशील होता है। सौन्दर्यप्रियता, आत्मानुभूति और रागात्मिकता वृत्ति के सहारे कवि प्रकृति के सामान्य रूपों को भी इस प्रकार वाणी देता है कि उसका प्रभाव ~~सहृदयों~~ को सदैव मोहित करता रहता है। यही कारण है कि संसार का प्रत्येक साहित्य मुख्य रूप में प्रकृति की प्रेरणा से ही प्रारम्भ हुआ है। इसके लिए कवि के चतुर्दिक व्याप्त प्रकृति - सौन्दर्य भी एक मुख्य कारण है।

" भारतवर्ष की शस्यश्यामला धरती प्रकृति सुन्दरी की क्रीड़ा स्थली है। यहीं अनादि काल से इसके सौन्दर्य ने विश्व को सम्मोहित किया है। यही कारण है कि ऋगवेद से लेकर आधुनिक साहित्य प्राकृतिक सौन्दर्य, सुषमा के गौरव से मण्डित है। आधुनिक हिन्दी साहित्य भी उसी महान परम्परा का विकसित स्वरूप है। वस्तुतः श्री जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत और सूर्यकान्त निराला के काव्य में जो प्रकृति चित्रण हुआ है, उस पर हिन्दी साहित्य गर्व कर सकता है।"

श्री सुमित्रानन्दन पन्त को प्रकृति का कोमल और सुकुमार कवि कहा जाता है। 'कौसानी' के हरित - भरित प्राकृतिक वातावरण में पन्त जी के मातृ स्नेह का अभाव जैसे भर गया था। अपने बाल्यकाल में घण्टों प्रकृति के स्नेहांचल में रहकर पन्त के मन में ~~स्नेह~~ स्नेह, अपनापन एवं अपनत्व की अनुभूति हुई। कोमल स्वभाव और सौन्दर्य प्रेमी पन्त के जीवन और काव्य का प्रस्थान बिन्दु प्रकृति ही थी। इसे ही 'देवि! माँ सहचरी प्राण' कहकर कवि की भावधारा विकासोन्मुखी हो उठी थी। वस्तुतः प्रकृति सौन्दर्य ने ही पन्त के कवि को जागृत तथा अनुप्राणित किया था। पन्त जी के शब्दों — "कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्म - भूमि कूर्मांचल प्रदेश को है।" "मैं और मेरी कला" शीर्षक निबन्ध में अपने कवि जीवन की आरम्भिक अवस्था का चित्रण करते हुए पन्त जी ने लिखा है कि —

(2)

② — "तब मैं छोटा सा चंचल भावुक किशोर था; मेरा काव्य कण्ठ अभी नहीं फूटा था। पर प्रकृति मुझ मातृहीन बालक को कवि जीवन के लिए मेरे बिना जाने ही, जैसे तैयार करने लगी थी। मेरे हृदय में वह अपनी मीठी स्मृतियों से भरी, [illegible] अंकित कर चुकी थी, जो पीछे मेरे भीतर अस्फुट तुतले स्वरों में बज उठी।" पन्त जी को प्रकृति के साहचर्य से जीवन के प्रति एक [illegible] आश्चर्य की भावना, सौन्दर्य प्रेम और कल्पनालोक प्राप्त हुआ। कवि के शब्दों में :—

"मुझ अंचल वासी को तुमने
शैशव में आशा दी पावन
नभ में नयनों को रखो तकसे
स्वप्नों का अभिलाषी जीवन।"

कवि प्रकृति प्रेम को ही सर्वोपरि मानता है, उसे सांसारिक स्थूल सौन्दर्य आदि से लगाव नहीं, इसी की अभिव्यक्ति पंत जी ने 'मोह' कविता में की है:—

'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन
भूल अभी से इस जग को।

प्रकृति से अत्यधिक लगाव होने पर भी कवि ने उसके कठोर और [illegible] चित्रण नहीं किया। प्रकृति संबंधी अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कवि ने लिखा है कि "साधारणतः प्रकृति के सुन्दर रूप ने ही मुझे अधिक लुभाया है पर उसका उग्र भी मैंने 'परिवर्तन' में चित्रित किया है [illegible] स्वभाव का भी मैंने [illegible] पक्ष-ग्रहण किया है, इससे मेरा मन वर्तमान समाज की कुरूपताओं से कट कर भावी समाज की कल्पना की ओर प्रभावित हुआ है। 'वीणा' में प्रकृति-चित्रण बाल स्वभाव सुलभ जिज्ञासा और कौतूहल से अभिभूत है। 'ग्रन्थि' में असफल प्रणय-गाथा की पृष्ठभूमि के रूप में प्रस्तुत है। 'पल्लव' प्रकृति चित्रण की दृष्टि से एक प्रौढ़ रचना है। इसकी अधि[illegible] कांश प्रकृति प्रधान रचनाओं में मांसलता, ऐन्द्रियता और संवेदनशीलता के संश्लिष्ट प्रयोग विद्यमान हैं। इसमें अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। 'गुंजन' में प्रकृति विषयक ~~कविताएँ~~ कविताएँ हिन्दी ही नहीं, विश्व साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। 'युगान्त' से 'ग्राम्या' तक की रचनाओं में प्रकृति की अपेक्षा कवि मानव जीवन के प्रति आकृष्ट हो जाता है। इस वर्ग की कविताओं में प्रकृति-चित्रण द्वारा कवि क्रान्ति, वर्ग वैषम्य, दैन्य, शोषण [illegible]

(3) शोक, आदि भावों की अभिव्यक्ति करता है। झंझा में नीम, ग्रामश्री, ग्रामचित्र आदि कविताएँ इसी का प्रमाण हैं। 'ग्राम्या' के पश्चात् कवि के जीवन की दिशा परिवर्तित होती है। वह गाँधीवाद और मार्क्सवाद के अहिंसत्वों से उठ कर अरविन्द दर्शन में जीवन की सर्वांगीणता के दर्शन करता है। 'उत्तरा', 'अतिमा', वाणी, 'कला और बूढ़ा चाँद' आदि कविताओं में कवि प्रकृति के काल्पनिक और कथनी प्रयोग करता है। इस प्रकार अपने चिन्तन के विकास क्रम के साथ कवि का प्रकृति दर्शन भी निरन्तर विकसित होता रहा है। पन्त जी के काव्य का अध्ययन करके यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने साहित्य में मान्य सभी प्रकार के प्रकृति चित्रण में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

सामान्यतः कवि में प्रकृति-चित्रण के निम्नलिखित प्रकार माने जाते हैं — (आलम्बन रूप में। उद्दीपन रूप में, आलंकारिक, मानवीकरण, उपदेशात्मक, रहस्यात्मक, वस्तु परिगणनात्मक, भावों की पृष्ठ-भूमि और प्रतीकात्मक रूप में। हिन्दी साहित्य के पहले तीन युगों में आलम्बन, उद्दीपन तथा उपदेशात्मक रूप की प्रमुखता रही, कुछ कवियों ने अप्रस्तुत विधान की दृष्टि से भी प्रकृति-चित्रण किया किन्तु आधुनिक युग में उसके विभिन्न स्वरूपों का विकास भी हुआ। छायावाद युग से पूर्व हिन्दी कविता में प्रकृति चित्रण पर विचार करते हुए (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा था कि — "हिन्दी की कविता में प्राकृतिक दृश्यों का सूक्ष्म वर्णन नहीं मिलता जो संस्कृत की प्राचीन कविताओं में मिलता है।" किन्तु आज यह नहीं कहा जा सकता। छायावादी कवियों, विशेषतः श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने जो चित्रण किया है वह इतना सफल और सम्पन्न है कि उसे विश्व साहित्य में गौरव से प्रतिष्ठित किया जा सकता है।) इसके लिए पन्त जी द्वारा प्रतिपादित विभिन्न चित्रण शैलियों का अध्ययन करना लाभप्रद होगा।

आलम्बन शैली → जहाँ कवि अपनी ओर से कुछ न कहकर प्रकृति के बिम्ब ग्रहण करने की चेष्टा करता है उसे आलम्बन शैली कहा जाता है। भारतीय काव्य में इस प्रणाली का अत्यधिक पालन हुआ है। वाल्मीकि, भास, कालिदास आदि संस्कृत कवियों ने प्रकृति-चित्रण के आलम्बन रूप को ही प्रधानता दी थी। उत्तरकालीन संस्कृत-साहित्य में आलम्बन का स्थान उद्दीपन ने ग्रहण कर लिया। छायावाद से पूर्व के काल में उद्दीपन ही प्रमुख रूप रहा किन्तु पन्त जी ने आलम्बन रूप को उसकी पूर्णता प्रदान की।

इस शैली में प्रकृति के सूक्ष्म अध्ययन से प्रकृति के अंग-प्रत्यंग, वर्ण, आकृति तथा परिस्थिति के संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करना आवश्यक होता है। पन्त जी का प्राकृति निरीक्षण अत्यन्त सूक्ष्म है। इसलिए उनकी 'छाया', 'पर्वत प्रदेश में पावस', 'बादल', 'हिमाद्री', 'गुञ्जन' तथा हिम प्रदेश आदि कविताओं में प्रकृति का आलम्बन स्वरूप पूर्ण संश्लिष्ट रूप में चित्रित हो सका। जैसे

"विद्रुम औ' मरकत की छाया,
सोने-चाँदी का सूर्यातप,
हिम परिमल की रेशमी वायु,
शत रत्नछाय खग चित्रित नभ।
पतझड़ के कृश पीले तन पर.
पल्लवित तरुण लावण्य लोक
शीतल हरीतिमा की ज्वाला
फैली दिशि दिशि कोमलाउल्लोक।" (अल्मोड़े का वसन्त)

उद्दीपन शैली — जब प्रकृति का चित्रण मानव के सुख दुख को बढ़ाने वाली सत्ता के रूप में किया जाता है तो उसे उद्दीपन शैली कहा जाता है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी भावनाओं के अनुरूप ही बाह्य संसार दिखाई देता है। मानव और प्राकृति में अभिन्नता ही व्याप्त हो जाती है। यही कारण है कि साहित्य का कोई भी युग इस शैली की उपेक्षा नहीं कर सका। पन्त जी ने रूप शैली का निर्वाह करते हुए साधर्म्य और वैधर्म्य दोनों रूपों को अपनाया है। जैसे-

"मुकुल मधुपों का मृदु मधुमास
स्वर्ण सुख, श्री सौरभ का सार,
मनोभावों का मधुर विलास,
विश्व सुषमा ही का संसार,
दृगों में छा जाता सोल्लास,
व्योम बाला का शरदाकाश,
तुम्हारा आता जब प्रिय ध्यान,
प्रिये, प्राणों की प्राण।" (भावी पत्नी के प्रति)

अप्रस्तुत विधान आलंकारिक शैली → इस शैली में कवि प्रकृति का वर्णन नहीं करता अपितु उसे भिन्न-भिन्न प्रकार के अप्रस्तुतों की व्यंजना का साधन बनाता है। प्राकृतिक वस्तु व्यापार को मनुष्यों के रूप-व्यापार और मनोवृत्तियों के सादृश्य और साधर्म्य की दृष्टि में प्रस्तुत करना इस शैली का अपेक्षित

(3)

(3) शोक, आदि भावों की अभिव्यक्ति करता है। झंझा में नीम, ग्रामश्री, ग्रामचित्र आदि कविताएँ इसी का प्रमाण हैं। 'ग्राम्या' के पश्चात् कवि के जीवन की दिशा परिवर्तित होती है। वह गाँधीवाद और मार्क्सवाद के अहिंसत्वों से ऊपर उठकर अरविन्द दर्शन में जीवन की सर्वांगीणता के दर्शन करता है। 'उत्तरा' 'अतिमा', 'वाणी', 'कला और बूढ़ा चाँद' आदि कविताओं में कवि प्रकृति के अ... काल्पनिक और कथनी प्रयोग करता है। इस प्रकार अपने चिन्तन के विकास क्रम के साथ कवि का प्रकृति दर्शन भी निरन्तर विकसित होता रहा है। पन्त जी के काव्य का अध्ययन करके यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने सा... में मान्य सभी प्रकार के प्रकृति चित्रण में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

सामान्यतः कवि में प्रकृति-चित्रण के निम्नलिखित प्रकार माने ... है —(आलम्बन रूप में। उद्दीपन रूप में। आलंकारिक। मानवीकरण। उपदेशात्मक रहस्यात्मक, वस्तु परिगणनात्मक। भावों की पृष्ठ-भूमि और प्रतीकात्मक रूप में। हिन्दी साहित्य के पहले तीन युगों में आलम्बन, उद्दीपन तथा उपदेशात्मक रूप की प्रमु... रही, कुछ कवियों ने अप्रस्तुत विधान की दृष्टि से भी प्रकृति-चित्रण किया, किन्तु आधुनिक युग में उसके विभिन्न स्वरूपों का विकास भी हुआ। छायावाद युग से पूर्व हिन्दी कविता में प्रकृति चित्रण पर विचार करते हुए (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा था कि — "हिन्दी की कविता में प्राकृतिक दृश्यों का सूक्ष्म वर्णन नहीं मिलता जो संस्कृत की प्राचीन कविताओं में मिलता है।" किन्तु आज यह नहीं कहा जा सकता। छायावादी कवियों, विशेषतः श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने जो चित्रण किया है वह इतना सफल और सम्पन्न है कि उसे विश्व साहित्य में गौरव से प्रतिष्ठित किया जा सकता है।) इसके लिए पन्त जी द्वारा प्रतिपादित विभिन्न चित्रण शैलियों का अध्ययन करना लाभप्रद होगा।

आलम्बन शैली → जहाँ कवि अपनी ओर से कुछ न कहकर प्रकृति के बिम्ब ग्रहण करने की चेष्टा करता है उसे आलम्बन शैली कहा जाता है। भारतीय काव्य में इस प्रणाली का अत्यधिक पालन हुआ है। वाल्मीकि, भास, कालिदास आदि संस्कृत कवियों ने प्रकृति-चित्रण के आलम्बन रूप को ही प्रधानता दी थी। उत्तरकालीन संस्कृत-साहित्य में आलम्बन का स्थान उद्दीपन ने ग्रहण कर लिया। छायावाद से पूर्व के काल में उद्दीपन ही प्रमुख रूप रहा किन्तु पन्त जी ने आलम्बन रूप को उसकी पूर्णता प्रदान की।

'सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है शान्त क्लान्त निश्चल।
तापस बाला गंगा निर्मल, शशिमुख से दीपित मृदु करतल,
लहरें उर पर कोमल कुन्तल,
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर लहराता तार ताल सुन्दर,
चंचल अंचल सा नीलाम्बर।" (नौका विहार)

हस्यात्मक शैली — जब कवि संवेदनशीलता के कारण हृदय और प्रकृति का घनिष्ठ म्बन्ध स्थापित कर लेता है तो उसे प्रकृति में किसी रहस्यात्मक शक्ति के संकेत मिलने गते हैं। इस भावभूमि में कवि को नक्षत्रों से मौन से मौन निमंत्रण मिलता है तो कभी ान्त सरोवर की लहरें उसकी इच्छाओं को आन्दोलित करने लगती हैं। ऐसी कविताएं चिन्तन में दार्शनिक चिन्तन की पुट मिलने पर ससीम और असीम के सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्तरों का उद्घाटन होता है। पन्त जी की प्रारम्भिक रचनाओं में किसी अज्ञात सत्ता के रहस्यात्मक संकेत है तो परवर्ती काव्य में जीव, जगत और ब्रह्म आदि विषयों पर कवि का चिन्तन व्यक्त हुआ है। इस दृष्टि से गुंजन, एकतारा, नौका विहार, उत्सर्ग, प्रार्थना, अन्तर्विकास आदि रचनाएं उल्लेखनीय हैं:—

"न जाने कौन अये द्युतिमान!
जान मुझको अबोध अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूंक देते छिद्रों में गान;
अहे सुख-दुख के सहचर मौन
नहीं कह सकता तुम हो कौन।" (मौन निमन्त्रण)

" वह रे अंनत का मुक्त मीन, अपने असंग सुख में विलीन,
स्थित निज स्वरूप में चिर नवीन।
निष्कंप शिखा-सा वह निरुपम, भेदता जगत जीवन का तम,
वह शुद्ध प्रबुद्ध, शुक्र, वह सम।" (एक तारा)

इनके अतिरिक्त श्री पन्त की कविता में प्रकृति को दूतिका रूप तथा संवेदनात्मक रूप से भी प्रस्तुत किया गया है। यह ठीक है कि पन्त ने प्राकृति प्रांगण में रहकर बहुत कुछ सीखा है किन्तु प्रकृति के उपदेशात्मक रूप का चित्रण उन्होंने अधिक नहीं किया। 'संदेश' आदि कविताओं में कहीं-कहीं उपदेशात्मकता की झलक मिलती है। किन्तु वह गौण रूप में ही है। हिन्दी साहित्य के अनेक कवियों ने वस्तुपरिगणन शैली को अपनाया था। जायसी, केशव तथा हरिऔध ने प्रकृति चित्रण करते हुए वस्तुपरिगणन शैली

गुण होता है। छायावादी कवियों ने रूप और धर्म की समानता की अपेक्षा प्रभाव-साम्य को महत्व दिया है। इस दृष्टि से पंत जी की 'नक्षत्र', 'बादल', 'आँसू', 'चाँदनी', 'मौन निमंत्रण' आदि कविताएँ उल्लेखनीय हैं:-

"व्योम विपिन में जब वसंत सा
खिलता नव पल्लवित प्रभात,
बहर हम तब अमित स्फोत में
गिर तमाल तम के से पात।" (बादल)

" अस्तमित निज कनक किरणों की तपन,
चरम गिरि को खींचता था कृपण-सा,
अरुण आभा में रँगा था वह पतन
रजकणों की वासनाओं से विफुल।
तरणि के ही संग तरल तरंग से
तरणि डूबी थी हमारी ताल में।" (ग्रन्थि से)

मानवीकरण शैली -> छायावाद का मूलदर्शन सर्वात्मवाद है, इसी कारण इस धारा के सभी कवियों ने प्रकृति को जड़ पदार्थ न मानकर उसे एक चेतन सत्ता का स्वरूप दिया है। वस्तुतः प्रकृति का मानवीकरण छायावाद की प्रमुख विशेषता है। जब कवि अपनी विशिष्ट भावनाओं की अभिव्यक्ति करने के लिए उनका प्रकृति पर आरोप करता है तो प्रकृति चेतनामयी होकर साकार हो उठती है। पन्त जी के लिए तो प्रकृति प्रारम्भ से ही 'देवी, माँ, सहचरी प्राण' बन चुकी थी। कालान्तर में कवि की दार्शनिकता और भावुकता ने इस प्रकृति को और भी विकसित कर दिया। 'प्रथम रश्मि का आना रंगिणि', 'छाया', 'बादल', 'एकतारा', 'नौका विहार', 'संध्या' आदि रचनाओं में प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कवि ने असंख्य रूपों में उसे चित्रित किया है:-

"मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल, दर्पण-सा फैला है विशाल।"

पर्वत प्रदेश में पावस

(7)

(7) को ही अपनाया है। किन्तु छायावादी काव्य इस प्रवृत्ति का विरोधी रहा है। यही कारण है कि पन्त जी ने वस्तु परिगणन जैसी नीरस शैली को नहीं अपनाया। इस प्रकार साहित्य में प्रचलित प्रकृति-चित्रण की समस्त शैलियों का समुचित प्रतिपादन करने में कवि को पूर्ण सफलता मिली है।

(पन्त जी के प्रकृति, चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने प्रकृति के प्राय: सभी अंगों का सफल चित्रण किया है। उनके लगभग सवा सौ प्रगीतों में संध्या, प्रभात, छाया, प्रकाश, नक्षत्र, चाँदनी, पशु-पक्षी सरिता, सरोवर, गिरि प्रान्तर, झरना, वनश्री, लता, गुल्म आदि प्रकृति के विविध उपादानों को आधार बनाया गया है। ऋतुओं, फल-फूलों, गिरि-प्रान्तर और पक्षियों के अतिरिक्त प्रभात, सन्ध्या, रजनी आदि को भी कवि ने अपना विषय बनाया है। इस प्रकार प्रकृति को जितने अधिक पार्श्वों से पन्त जी ने देखा और अपनी रचनाओं में उसके भास्वर रूप को अंकित किया है, उतने अधिक रूपों और प्रकारों में हिन्दी के किसी अन्य कवि ने न तो उसे देखा और न अपनी रचनाओं में अंकित किया है। अत: हिन्दी में पन्त जी को एकमात्र 'सुन्दरम्' और प्रकृति का कवि कहा जाता है जो सर्वथा उचित ही है।

— × — × — × —